Historicity Research Journal
Volume 2 | Issue 8 | April 2016

Impact Factor : 0.4521(UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

गंगा के जल प्रदूषण का प्रभाव एवं सरकार की नीति

रेनू चौहान

समाजशास्त्र विभाग , एस.बी.डी. कालेज, धामपुर
जनपद बिजनौर ।

प्रस्तावना –

भारतीय सभ्यता को पालने-पोसने में गंगा नदी की सदियों से अहम भूमिका रही है। यह कई ऐतिहासिक क्षणों की साक्षी भी रही है । अब यह नदी अपने इतिहास के सबसे मुश्किल दौर से गुजर रही है । गर्मी का मौसम शुरू होने से पहले ही गंगा में इस साल जल प्रवाह न्यूनतम स्तर पर आ चुका है ।

पिछले पॉच वर्षो में आठ अप्रैल के दिन छोड़े जाने वाला जल

वर्ष	क्यूसेक
2011	18136
2012	6000
2013	6279
2014	9153
2015	13542
2016	1469

गंगा की धारा के स्थान पर रेत के टीले दिखाई दे रहे हैं । इससे प्रदेश के ५५ जिलो में पानी का संकट गहराएगा । इन हालात में पानी को तरस रहे देश के कई राज्यों में उ०प्र० का नाम जल्द शामिल हो जायेगा । मध्य गंगा बैराज सिंचाई विभाग के रिकार्ड के मुताबिक हालात यह है कि पिछले वर्ष ८ अप्रैल को गंगा में साढ़े तेरहा हजार क्यूसेक पानी छोड़ा गया था । मगर इस वर्ष ८ अप्रैल को मात्र १४६६ क्यूसेक पानी ही रह गया ।

पवित्र और जीवनदायी गंगा में पानी का घटता जलस्तर खतरे की घंटी है । वर्तमान रिकार्ड पर गौर करें तो आने वाले दिनों में गंगा की धारा में पानी ना के बराबर ही रह जायेगा । यही नहीं मई महिने में गंगा में जल होगा या नहीं, इस पर सवाल है । चूँकि हरिद्वार से गंगा में शुक्रवार को मात्र ६०० क्यूसेक पानी उ०प्र० के लिये छोड़ा जायेगा जो एक दिन पहले एक हजार क्यूसेक छोड़ा गया था ।

''गंगा का जलस्तर पिछले कई वर्षो की तुलना में सबसे नीचे पहुँच चुका है । इसका कारण पहले बरसात का कम होना और फिर सर्दियों में बारिश न होना रहा है । हरिद्वार से जो पानी छोड़ा जा रहा है, उस कारण गंगा में जलस्तर कम हुआ है । जितना पानी हरिद्वार से मिलेगा उसे दूसरे जिलो के लिए छोड़

दिया जायेगा''

राकेश कुमार, एक्सईएन, सिंचाई विभाग

जल प्रदूषण के प्रभाव

आगरा में वाटर टैंक से पानी भरते लोग ।

- बुंदेलखण्ड में कई गांवों के नवयुवकों को नहीं मिल रही दुल्हनें ।
- चित्रकूट में कुंवारा रह गया एक गॉव ।
- पानी को लेकर झांसी में झगड़ों की शुरूवात

''क्षेत्र–इस्लामनगर, राहुल नगर, भगवती नगर, पाण्डव सिटी, पवन विहार, राधा विहार, आबादी–करीब 30 हजार, भूजल स्तर 300 से 350 फुट तक, हर दिन करीब 40 टैंकर पानी बेचने आते हैं । छः हजार लीटर क्षमता का एक टैंकर 80 रूपये में भरता है । 500 रूपये में बिकता है'' ।

घटते जल स्तर के साथ-साथ जल प्रदूषण की समस्या का भी सामना करना पड़ रहा है । जिसका ज्वलंत प्रमाण है कि पवित्र पावन गंगा नदी, जिसका जल कई वर्षो तक रखने पर भी स्वच्छ व निर्मल रहता है, लेकिन इस स्वार्थी मनुष्य ने अंधविश्वास व निजी लाभ के लिये गंगा मैय्या को दूषित करना शुरू कर दिया । जैसे – गंदे नालो, औद्योगिक इकाईयों का गंदा पानी व कचरा और अन्य सहायक नदियों से आ रहा प्रदूषित जल इतना ही नहीं हरिद्वार जिले में ७८ होटल ऐसे हैं जो गंगा मैय्या को दूषित कर रहे हैं । इसमें बांध बनने से समस्या और विकराल हो गई है । केन्द्र में रखे गए गंगा पर स्टेट रिपोर्ट के मुताबिक गंगा में नरौरा से बलिया तक सबसे अधिक प्रदूषण है । सरकार का खुद मानना है कि रेत व पत्थर की खनन आदि के द्वारा शहरी सीवेज, औद्योगिक प्रदूषण से गंगा धीमी मौत मर रही है ।

गंगोत्री से ही चला गंदगी का सिलसिला

- ✦ देवप्रयाग में हाल बुरा
- ✦ हरिद्वार के बाद हालात खराब
- ✦ गंगा की सेहत सुधरने की उम्मीद बरकरार
- ✦ १४.६० करोड़ लीटर सीवर प्रतिदिन निकल रहा है शहरों में ।
- ✦ ८.२० करोड़ लीटर सीवर बिना ट्रीटमेंट के ही गंगा में जा रहा है ।

✦ २० नगरों, जो गंगा के किनारे हैं, से सीवर की गंदगी गंगा में जा रही है ।
✦ प्रदेश में तालाबों के गायब होने से जल संकट का खतरा और अधिक विकराल हुआ
✦ ऋषिकेश में राहत –

पच्चीस फैक्टियां घोल रही रसायन

बिजनौर/हापुड़/बुलंदशहर/बिजनौर जिले की 25 फैक्ट्रियॉ गंगा में किसी नाले या नदी के जरिये रसायन घोल रही हैं । यही नहीं विदुर कुटी के सामने दारानगर गंज गांव का सीवरेज भी गंगा में जा रहा है । गंगा किनारे बसे गांव तो गंगा को कूड़ा ठिकाने लगाने का साधन सा मानते हैं । नदी से जलीय जीव गायब हो चुके हैं । वाइल्ड लाइफ विशेषज्ञ जिले में गंगा के प्रदूषण को लेकर चिंचित हैं । प्रदूषण बोर्ड अधिकारी एके तिवारी की मानतें तो लगातार फैक्ट्रियों को नोटिस दिए जा रहे हैं । शहर से निकलने वाले गंदे पानी को शुद्ध करने के लिए लगाए जा रहे सीवर ट्रीटमेंट प्लांट सात साल में भी नहीं बन पाए हैं । जनवरी से मार्च तक जलस्तर इतना कम हो जाता है कि प्रदूषित पानी के कारण गंगा का जल काला हो जाता है ।

मौसम में बदलाव, सूखेपन, खारेपन, औद्योगिक अवशेषों से होने वाले प्रदूषण और पीने के पानी के स्रोतों जैसे – नदियॉ जलग्रह-क्षेत्र, जलाशय प्रणालियों में पेस्टिसाइड्स के लगातार इस्तेमाल का काफी बुरा प्रभाव पीने के पानी पर पड़ा है । नतीजा ये है कि हमारे पीने के पानी में जंग, टॉक्सिक कैमिकल्स, आर्सेनिक, फ्लुराइड, लेड, हेवीमेटल्स और अन्य घुली अशुद्धियॉ होने की संभावना बढ़ती जा रही है ।

हमारे घर के नल तक आने वाला पानी (नल या ग्राउंड वाटर) हम तक पहुँचने से पहले दूषित हो रहा है । जिसके कारण खतरनाक बीमारियों का सामना करना पड़ रहा है । वैसे तो वाटर ट्रीटमेंट प्लांटस सेफ ड्रिंकिंग वाटर स्टैडर्ड्स पर खरे है, लेकिन फिर भी नल में आने वाले पानी में घुली अशुद्धियॉ हो सकती है, जो खतरनाक बीमारियों को आमंत्रित कर रही है ।

समाचार पत्रों द्वारा विदित हुआ है कि उ०प्र० के इन २० जिलो की सब्जियों में कैंसर का खतरा – बिजनौर सहित २० जनपदों का पानी जहरीला हो गया है । इन जिलो के ग्रांउड वाटर में आर्सेनिक तत्व मिला है । लोक सभा की प्राक्कलन समिति के सर्वे रिपोर्ट का गहन अध्ययन करने के बाद इन उ०प्र० के २० जनपदों में पत्तेदार सब्जियों की बुआई नहीं करने की सलाह दी है । इस संबंध में राज्य औद्योनिक मिशन उत्तर प्रदेश को भी दिशा निर्देश जारी किए गए हैं ।

राज्य औद्योगिक मिशन उत्तर प्रदेश की ओर से जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय को भेजे गए पत्र में कहा गया कि बिजनौर, मेरठ, मुरादाबाद, बहराइच, बलिया, बलरामपुर, बरेली, बस्ती, चंदौली, गाजीपुर, गोंडा, गोरखपुर, लखीमपुर, खीरी, मिर्जापुर, रायबरेली, संतकबीर नगर, शाहजहांपुर, सिद्धार्थनगर, संतरविदास नगर, उन्नाव जनपदों में ग्रांड वाटर में आर्सेनिक बड़ी मात्रा में मिला है ।

आर्सेनिक तत्व का प्रभाव सबसे ज्यादा पत्तेदार सब्जियों पर होता है । खाद्य, श्रंखलायें, पत्तेदार सब्जी आर्सेनिक प्रदूषण के प्रति अधिक संवेदनशील होती है । स्वास्थ्य विभाग के अनुसार अर्सेनिक युक्त पानी या सब्जी का इस्तेमाल करने में कैंसर, हार्टअटैक, फेफड़ा, त्वचा सम्बन्धी बीमारी हो सकती है ।

महिलाओं एवं बच्चों पर आर्सेनिक का प्रभाव अधिक होता है । राज्य औद्योगिक मिशन के अन्तर्गत

पत्तेदार सब्जी उगाने के लिए २० जनपदों में अनुदान भी नहीं मिलेगा । जिला उद्यान निरीक्षक नरपाल मलिक का कहना है कि औद्योगिक इकाईयों द्वारा नदियों व नाले में डाले जा रहे कैमिक्ल युक्त पानी से ही भूगर्भ जल में आर्सेनिक तत्व बढ़ा है ।

पत्तेदार सब्जी नहीं उगाने के सम्बन्ध में किसानों को जागरूक किया जा रहा है । पत्र में उद्यान विभाग को जिले में जगह-जगह भूगर्भ जल की जॉच कराने के निर्देश दिए गए हैं । ऐसे क्षेत्र जहॉ पर आर्सेनिक नहीं है वहॉ पर पत्तेदार सब्जी उगाई जा सकती है । उधार सूत्रों के मुताबिक पानी की जॉच के लिए लखनऊ में ही लैब है ।

उद्यान विभाग के पास पानी की जॉच करने के कोई उपकरण नहीं है । जिला उद्यान अधिकारी मनोहर सिंह के अनुसार किसानों को पत्तेदार सब्जियों की गंदे या नाले के पानी से भी सिंचाई नहीं करनी चाहिए । शहरों के नालों का गंदा पानी भी पत्तेदार सब्जी को नुकसान पहुँचाता है ।

जनपद में २४ प्वाइंट पर नदियों में औद्योगिक इकाईयों का पानी डाला जा रहा है, मालनद्व छोईया, बान, रामगंगा, करूला, आदि नदियों में सबसे ज्यादा प्रदूषण है । उधर नगर पालिका क्षेत्रों में भी ट्रीटमेंट प्लांट नहीं है । नालो के माध्यम से नगर पालिकाओं का गंदा पानी नदियों में जा रहा है ।

कई गॉवों में हो चुका है कैंसर :–

गंगा की सहायक नदियों के किनारे गड़ाना, अगरी, आगरा, शाहपुर, नसीरी, शादीपुर समेत कई गांवों में ग्रामीणों को कैंसर हो चुका है । प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड जिले में आर्सेनिक तत्व की उपस्थिति से इन्कार करता रहा है, लेकिन लोक सभा की प्राक्कलन समिति के पत्र ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की भी कलाई खोल दी है ।

इस सम्बन्ध में फिजिशियन डा० राज कुमार का कहना है कि पानी में आसर्वेनिक की मात्रा होने से कैंसर, त्वचा संबंधी, फेफड़े संबंधी, हार्ट अटैक संबंधी बीमारी होती है ।

सरकारी प्रयास :–

महामहिम राष्ट्रपति महोदय माननीय प्रणव मुखर्जी जी ने देश के भूजल के गिरते स्तर पर गंभीर चिंता जताते हुए कहा है कि इसके उचित उपयोग पर पूरी दुनिया को ध्यान देना होगा । उनहोंने कहा कि यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी को पर्याप्त पानी उपलब्ध हो। जल संसाधन मंत्री उमा भारती ने भी इस पर चिंता जताई और कहा कि इस स्थिति में सुधार के लिए अगले पांच साल में छः हजार करोड़ रूपये खर्च किए जायेंगे । रेल मंत्री सुरेश प्रभू ने नदियों के जोड़ने के काम में तेजी जाने और परंपरागत जल स्रोतों को बचाने का आह्वान किया ।

पांच दिन चले चौथे भारत जल सप्ताह का समापन करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण पारिस्थितिकी में बड़ा बदलाव आया है । इसके असर से सूखा पड़ रहा है और बाढ़ का ज्यादा खतरा भी बढ़ रहा है। साथ ही पूरी दुनिया का तेजी से औद्योगिकीकरण होने से पानी की खपत की दर बढ़ रही है, लेकिन दूसरी तरफ जल संरक्षण नहीं हो रहा है । यह स्थिति बेहद खतरनाक है । प्रणव मुखर्जी ने कहा कि बदली परिस्थितियों में भारत में जल संरक्षण के लिए नई तकनीक के इस्तेमाल समेत जरूरी कदम उठाने होंगे । भारत में दुनिया की १७ प्रतिशत आबादी है, लेकिन जल उपलब्धता केवल चार फीसदी है ।

इजराइल से सीखेगा भारत : राष्ट्रपति ने उम्मीद जताई कि भारत जल सप्ताह में शामिल हुए देश-विदेश के विशेषज्ञों तथा कार्यान्वयन एजेंसियों ने परस्पर अनुभवों का जो आदान प्रदान किया है वह जल संरक्षण बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगा ।

''वर्ष 2018 तक गंदे नालो के नदी में मिलने से रोकना संभव होगा, केन्द्र ने 20 हजार करोड़ रूपये के बजट की व्यवस्था की है'' ।

केन्द्र ने लगाया पूरा जोर :–

केन्द्र ने नमामि गंगे कार्ययोजना के तहत गंगा को साफ करने के लिए पूरी ताकत लगा दी है । इसके लिए जल संसाधन, शहरी विकास, ग्रामीण विकास, पेयजल व स्वच्छता, पर्यटन, मानव संसाधन, आयुष व नौवहन मंत्रालय साथ काम कर रहे हैं ।

चुनौतियां भी कम नहीं :–

✦ इस साल नदी किनारे बसे २०० गांवों में नालों का निर्माण और जल शोधन करना, अगले पांच साल में १४५७ गांवों में यह सुविधा देना ।

✦ मार्च २०१६ में २५ स्थानों पर शवदाहगृहों को उन्नत करना, १०० शवदाहगृहों को प्रदूषण रहित करना ।
✦ सफाई व सौंदर्यीकरण भी :-
✦ साल २०१६ में पटना में ६.६ किलोमीटर की लंबाई में घाटों का सौदर्यीकरण का काम पूरा होगा ।
✦ २०१६ से चंडीघाट (हरिद्वार), छटघाट (चमुना-दिल्ली) व साहेबगंज (झारखण्ड) में काम शुरू होगा ।

सरकारी प्रयास और लक्ष्य :–

✦शहरी क्षेत्रों के लिए :- ३० शहरों सीवेज शोधन संयंत्र के लिए जुलाई २०१६ में टेंडर जारी होंगे । ५० शहरों में ठेका कंपनी की नियुक्ति का काम अक्टूबर २०१६ तक
✦२०१८ तक गंगा के किनारे बसे सभी शहरी निकायों में सीवेज शोधन की सुविधा होगी ।
✦गंगा की सतही सफाई - २०१६ में सभी शहरों में बने घाटों की सफाई कार्य शुरू करना ।
✦वाराणसी में स्कीमर मशीन सु सफाई कार्य शुरू हो चुका है, शेष में जल्द
✦औद्योगिक प्रदूषण - मार्च २०१७ तक पल्प व पेपर मिलों का ६५ फीसदी प्रदूषण कम करना ।
✦सितम्बर २०१६ तक सभी डिस्टलरी से द्रीवय प्रदूषण पर पूरी रोक लगाना ।
✦सितम्बर २०१६ तक चीनी उद्योगों में पानी की खपत को ६० प्रतिशत कम करना।

ऋषिकेश में राहत :–

✦ ऋषिकेश में लक्ष्मणझूला और त्रिवेणी घाट में सीवर ट्रीटमेंट प्लांट बन जाने से गंगा को गंदगी से मुक्ति मिल गई है । पहले १२ नाले सीधे गंगा में गिरते थे।

निष्कर्ष

अन्त में मैं यही कहूँगी की जल प्रदूषण व घटते जल स्तर के लिये मनुष्य स्वयं ही जिम्मेदार है । वह अपने निजी स्वार्थो को त्याग कर अपनी आने वाली पीढ़ी के भविष्य के बारे में नहीं सोचें । हम उनके लिए पैसा, मकान आदि तो छोड़ जायेंगे, लेकिन जीने के लिए अमृत तुल्य जल कहॉ से दे पायेंगे । इसलिये मनुष्य को आने वाले समय के लिए सावधान हो जाना चाहिए क्योंकि ***''स्वच्छ जल ही जीवन है''***, यही मनुष्य के जीवन का मूल मंत्र होना चाहिये ।

१.शहरी सीवरों, गंदे नालो व औद्योगिक इकाईयों से प्रदूषित पानी को रिसाईक्लिंग करके सिंचाई एवं औद्योगिक इकाईयों में शुद्ध जल के स्थान पर प्रयोग करना चाहिए।
२.गांव व शहरों में बरसात के पानी को नाले/नाली की जगह रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम द्वारा जल को संरक्षित किया जाये ।
३.शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पीने एवं अन्य प्रयोग हेतु समरसेविल पम्प लगाने पर सरकार द्वारा रोक लगाई जाये, जैसा कि हरियाणा राज्य के सभी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जल दोहन के नियंत्रण हेतु सरकार द्वारा प्रतिबन्धित है ।

सन्दर्भ सूची

१.करूक्षेत्र - ग्रामीण विकास की समर्पित अंक-०२ दिसम्बर २०१४, बहती रहे निर्मल गंगा - संजय श्रीवास्तव
२.इंडिया टुडे ६ मार्च २०१६ - नया राष्ट्रवाद, यू०पी० उत्तराखण्ड विशेष
३.दि० १३.०१.२०१५ - अमर उजाला
४.दि० ०६.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
५.दि० ०७.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
६.दि० ०८.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
७.दि० ०६.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
८.दि० १०.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
९.दि० १०.०४.२०१६ दैनिक जागरण
१०.दि० ११.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
११.दि० १२.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
१२.दि० १३.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
१३.दि० १४.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
१४.दि० १४.०४.२०१६ दैनिक जागरण
१५.दि० १५.०४.२०१६ हिन्दुस्तान
१६.इन्टरनेट पर सर्च ।

रेनू चौहान
समाजशास्त्र विभाग , एस.बी.डी. कालेज, धामपुर , जनपद बिजनौर ।